विदेशी में जगा साधुत्व से अनुराग

बीदासर, 31 मार्च।

जो जीने की कला सिखाते हैं। जिनके आभामण्डल में बैठने मात्र से आनन्द की अनुभूति होती है। जिनका जीवन ही शांति का पैगाम देता है। ऐसे गुरु के सान्निध्य में पूरा जीवन ही अर्पित कर दें तो कम हैं कुछ ऐसा ही कइना है रसिया से आये एक परिवार का। जो यहां पीछले 20 दिनों से राष्ट्रसंत आचार्यप्रवर के सान्निध्य में अध्यात्म के गुर सीख रहे हैं। मार्क के पिता एन्ड्रयू फोमेन्चुक माता एवगीना फोमेन्चुक के साथ आये 11 वर्षीय मार्क को देखकर ऐसा लगता है कहीं वह मुनि ही न बन जाये। वह प्रातः जल्दी ही उठकर आचार्यप्रवर की चरण वंदना करता है। उसके बाद योगा एवं प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करता है।

दिनभर मुंहपट्टी बांधकर रखने वाला मार्क चित्रकारी में भी कुशल है। वह भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्यप्रवर के चित्र इतनी जल्दी बना देते हैं। इतनी छोटी वय में मार्क द्वारा बनाये गये इतने सुन्दर चित्रों को देखकर एवं साधुत्व के प्रति उसके अनुराग ने आचार्य महाप्रज्ञ को भी प्रभावित किया है। मार्क रोजाना संतों के पास हिन्दी सिखने के साथ जैन मुनि चर्या से भी परिचित हो रहा है। वह रोजाना शाम को ऊं भिक्षु की माला जपता है और रात्री में आचार्यप्रवर के द्वारा कराये जाने वाले ध्यान के प्रयोगों की स्थिरता एवं एकाग्रता के साथ करता है।

इस रसियन परिवार को देखकर लगता है हिन्दुस्तान की धरती त्याग–तपस्या और ऋषि महर्षियों की भूमि है। जो सात समुद्र पार से भी खींचकर ले आती है।

अब विष्वविद्यालयों में पढ़ाया जायेगा सापेक्ष अर्थषास्त्र

बीदासर, 31 मार्च।

राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा लिखित ''महावीर का अर्थशास्त्र'' कृति के आधार पर निर्मित सापेक्ष अर्थशास्त्र को अनेक विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रम में सम्मलित करेंगे। उक्त संकल्प जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय में आयोजित एक संगोष्ठी में भाग लेकर आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शनार्थ पहुंचे अनेक विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि मण्डल ने व्यक्त किया।

राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के चैरयमेन जस्टिस एन.के. जैन, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के प्रो. वाइस चांसलर प्रो. आर.एन. पाल, गांधी भवन, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के चैयरमेन प्रो. जयनारायण शर्मा, काशी विद्यापीठ बनारस में गांधी अध्ययन एवं शांति विभाग के चैयरमेन प्रो. आर.पी. द्विवेदी की मौजूदगी में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने तेरापंथ भवन में

सापेक्ष अर्थशास्त्र के सूत्र की चर्चा करते हुए कहा कि अमीर और गरीब के बीच सापेक्षता जरूरी है। जब तक जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होगी तब तक हिंसा को नहीं रोका जा सकता। अभाव के कारण ही व्यक्ति हिंसा की तरफ आकर्षित होता है। 'रिलेटिव ऑफ इकोनॉमिक्स' में सापेक्षता, समन्वय–संतुलन और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सूत्रों पर ध्यान केन्द्रीत किया गया है।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि सापेक्ष अर्थशास्त्र को किसी एक धर्म के साथ नहीं जोड़ा जायेगा। सभी धर्मों से विचार लिये जायेंगे पर इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक स्तर पर जो समस्याएं है उनका समाधान देना है। आचार्य प्रवर ने अपनी अहिंसा यात्रा के प्रसंगों की चर्चा करते हुए कहा कि हमने इस यात्रा के दौरान अनुभव किया कि जहां हिंसा थी, आतंकवादी तैयार होते थे वहां अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र खोले गये, जिससे वहां पर हिंसा पर लगाम लगी और आतंकवादी केन्द्र बंध हो गये। उल्लेखनीय है कि सम्पूर्ण देश में 353 अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र चल रहे हैं। जिसमें हृदय परिवर्तन अहिंसात्मक रोजगार प्रशिक्षण और अहिंसा का सैद्धांतिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इन केन्द्रों में लाखों लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

– अशोक सियोल